Notes

फ्रोबेल (FROEBEL)

जीवन परिचय :- किण्डरगार्टन प्रणाली के जन्मदाता तथा खेल विधि के प्रबल समर्थक फ्रोबेल का जन्म जर्मनी के एक गाँव में 21 अप्रैल 1782 को हुआ, उनका पूरा नाम फ्रेडरिक विल्हेम अगस्त फ्रोबेल था। इनका बचपन काफी उपेक्षित रहा, जिस कारण यह अपने आप को व्यस्त रखने के लिए प्रकृति के नजदीक चले गए और अपना अधिकांश समय प्रकृति के बीच बिताते थे। इनके जीवन का दो ~~उद्देश्य~~ बातें बहुत किया पहला पिता का धार्मिक प्रभाव और दूसरा प्रकृति प्रेम। इन्ही दो बातों ने उन्हें रहस्यवादी और आदर्शवादी बना दिया।

सन् 1816 ई० में ग्रीशेम (Griesheim) में एक छोटे से स्कूल की स्थापना की, और स्कूल की स्थापना इन्होंने अपने सिद्धान्तों के अनुसार किया। इस स्कूल पर इन्होंने यह बात पर बल दिया कि बच्चे खेल तथा क्रियात्मक कार्यों द्वारा अपने आपको अभिव्यक्त करें। फ्रोबेल ने बच्चों पर कोई बाह्य प्रभाव नहीं आने दिया। सन् 1826 ई० में फ्रोबेल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "The Education of Man" का प्रकाशन किया। इस पुस्तक में इन्होंने 'शिक्षा का सच्चा सिद्धान्त की बात इंगित की। इस पुस्तक में यह लिखते हैं कि बच्चों की मस्तिष्क को

Notes

ऐसी सजीव सम्पूर्ण इकाई मानें, जिसमें सभी अंग मिलकर कार्य करें ताकि समरसता उत्पन्न कर सकें।" अतः इन्होंने 1836 ई० में जर्मनी लौट कर ब्लैंकेनबर्ग (Blankeburg) गाँव में अपना प्रथम शिशु विहार केन्द्र खोला। यहाँ इन्होंने अपना समस्त जीवन शिक्षकों के प्रशिक्षण में तथा शिशु विहार सम्बन्धी उपकरणों को निश्चित करने में लगा दिया।

फ्रोबेल के जीवन दर्शन के मुख्य तत्व

Main Elements of ~~Frob~~ Froebel's Philosophy of Life

(1) एकता का सिद्धान्त (Principle of Unity)

फ्रोबेल के विचारानुसार संसार में केवल एक ही शाश्वत नियम कार्य करता है वह है- एकता का नियम। इसी से सब पदार्थ, मनुष्य और प्रकृति परिचालित है। इन्होंने लिखा है- "सब पदार्थ को जीवन देने वाला एक ही ईश्वर है।" सभी पदार्थों का एक ही धरातल अथवा मूल है और वह है ईश्वर सभी पदार्थ उसी एक में निवास करते हैं उसी एक में उनका अस्तित्व है और उसी के द्वारा वे अपने अस्तित्व को व्यक्त करते हैं।

Notes

2) विकास का सिद्धान्त (Principle of Development)

यह सिद्धान्त पहले के सिद्धान्त पर आधारित है। हम उसी एक ईकाई की ओर चले जा रहे है। हम निरन्तर विकास कर रहे है। फ्रोबेल का विश्वास था कि मस्तिष्क का विकास भीतर से होता है। बच्चा जो कुछ भी बनना चाहता है वह अपने क्रिया और विकास से बनता है।

3.) स्व क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Self activity)

वास्तविक विकास स्वयं क्रियाशीलता द्वारा ही संभव है। बाह्य क्रियाशीलता कृत्रिम तथा अप्राकृतिक होती है। एक अनुभवी निरीक्षक भली-भाँति जान लेता है कि बच्चा क्या है और क्या बनेगा?

4.) सामाजिक व्यवस्था द्वारा व्यक्तित्व का विकास (Principle of Development of Individuality through Social Setting)

फ्रोबेल के अनुसार स्कूल समाज का छोटा रूप है, फ्रोबेल का कहना है कि कोई भी समाज तब तक उन्नति नहीं कर

Notes

एकता, जब तक कि व्यक्ति पिछड़ रहा है। उनका विश्वास था कि व्यक्ति का जीवन सामाजिक जीवन से भिन्न नहीं है।

5.) प्रतीकात्मकता का सिद्धान्त (Principle of Symbolism) फ्रोबेल का प्रतीकों तथा संकेतों में विश्वास था। ये प्रतीकात्मक संकेत बच्चों के मन और बौद्धिक पदार्थों के सम्बन्धों को समझने में सहायक होते हैं। फ्रोबेल ने शिक्षण के लिए कई उपहारों (Gift) की रचना की जिनमें प्रतीकात्मकता निहित है।

फ्रोबेल के शैक्षिक ~~दर्शनिक~~ विचार
Educational Thought of Froebel

1. शिक्षा का उद्देश्य : पवित्र जीवन की प्राप्ति (Objective of Education: Realisation of Pure life.

फ्रोबेल ने अपनी पुस्तक "एजुकेशन ऑफ मैन" (Education of Man) में शिक्षा के इसी उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि भूमण्डल पर जितनी वस्तुएँ हैं उन सब में दैवी एकता है, और इस दैवी एकता का मानव को स्पष्ट ज्ञान हो जाए। अतः शिक्षा का उद्देश्य बालक को पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करना।

Notes

शिक्षा व्यक्ति को अपने मन की पवित्रता की ओर निर्देशित करे। प्रकृति के साथ उसका शांतिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करे, तथा ईश्वर के साथ एकात्म ऐक्य (Unity) स्थापित करे।

2.) बालक की रुचियों का अध्ययन (Study of the child's interests)

अध्यापक बालक की रुचियों के अध्ययन करें, तदनुसार उसे शिक्षित किया जाए और वह अपने रुचि को अपने जीवन का उद्देश्य एवं लक्ष्य बना सके।

3. स्वतंत्रता का सिद्धान्त (Principle of Freedom)

बालक को पर्याप्त स्वतंत्रता दी जानी चाहिए जिससे वह अपने जीवन के उद्देश्यों को स्वतंत्रता पूर्वक प्राप्त कर सके। उसे किसी भी बंधन में ना बांधे जिससे वह अपनी रुचि एवं ज्ञान का विकास ना कर पाए।

4. स्नेह का बर्ताव (Treatment of Love)

छात्र के साथ अधिकतम स्नेह का बर्ताव करना चाहिए, जिससे बालक के अन्दर किसी भी प्रकार का भय उत्पन्न ना हो सके और अपने विचारों को आसानी से व्यक्त कर सके।

Notes

5) परिवार का बालक की शिक्षा में प्रभाव
(Role of the family in Education of the child)

फ्रोबेल का मत है कि माताएँ बालकों की आदर्श गुरु होती है, तथा परिवार द्वारा प्राप्त की गई अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और प्राकृतिक होती है।

फ्रोबेल के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त
Principles of Education by Froebel.

1. मस्तिष्क में शब्द ज्ञान बढ़ाना - फ्रोबेल के अनुसार बालक के मस्तिष्क में विभिन्न शब्द ज्ञान को बढ़ाना है, क्योंकि जब तक शब्द ज्ञान का विकास नहीं होगा वह अपने विचारों को नहीं व्यक्त कर पायेगा।

2. बच्चों को क्रियाशील बनाना - बालक को क्रियाशील बनाना ताकि वह अपने रुचि के अनुसार विभिन्न कार्यों में हिस्सा ले सके।

3. स्वभाव और आवश्यकताओं का तालमेल - बालक का रुचि के अनुसार उसके कार्यों के बीच तालमेल होना चाहिए।

4.) बालक को स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना - बालक को स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना ताकि वह अपने हिसाब से फल फूल सके, तुर्यात उसका चहुँ विकास हो सके।

5) सामाजिक पहलू पर बल देना - फ्रोबेल ने शिक्षा के सामाजिक पहलू पर भी बल दिया। उसका विश्वास था कि घर, स्कूल धर्म तथा राज्य इत्यादि सामाजिक अभिकरण भी बच्चे का विकास करते हैं और इसमें रहते हुए बच्चा अनेकरूपता में एकरूपता का आभास पा लेता है।

6) कल्पना शक्ति का विकास करना - बच्चों की कल्पना शक्ति को प्रेरित करने के लिए उसने गीतों, हाव भावों तथा रचनात्मक कार्यक्रमों को निर्धारित किया।

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षक का कार्य

Role of the teacher according to froebel

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षक का स्थान बगान के माली के समान है, जो

Notes

उसे जीवन में विभिन्न परिस्थितियों में कैसे जीना है? इसका ज्ञान प्रदान करते हैं। शिक्षक अपने प्रयत्नों द्वारा बालक की सहायता करता है, जो कि अपने स्वभाव के अनुसार उन स्तरों तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अतः शिक्षक का स्थान सही मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष (conclusion)

फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा का मुख्य कार्य संक्षेप में यह है कि शिक्षा मनुष्यों का पथ प्रदर्शन करे ताकि वे अपने आपको स्पष्ट रूप से समझ सके। शिक्षा मनुष्यों को अपने आत्म ज्ञान से मानव जाति के ज्ञान की ओर ईश्वर और प्रकृति के ज्ञान की ओर तथा स्वच्छ और पवित्र जीवन की ओर ऊर्ध्वमुखी करे।